Reviews of Literature
Impact Factor : 1.4716 (UIF)
Volume 2 , Issue 5 / Dec 2014 ISSN:-2347-2723

'आवारा मसीहा-शरद बाबू के जीवन की प्रामाणिकता'

मीरा जोशी

(हिंदी विभाग) , कै.दिगंबरराव बिंदू कला वाणिज्य विज्ञान महाविद्यालय, भोकर ता.भोकर , जि.नांदेड.

सारांश-

जीवनी दूसरों के द्वारा लिखी जाती है जब कि आत्मकथा अपने द्वारा पाश्चात्य प्रभाव के कारण ही भारतेंदू युग में इस जीवनी विधा का आरंभ हुआ। हालांकि भक्ति काल में भक्ति माल और वार्ता-साहित्य मिलता है। जिनमें भक्तों एवं संतों के चरित्र की अलौकिक महिमा सम्पन्न रुप में अतिरंजनापूर्व शैली में उपस्थित किया गया है। भारतेंदू युग में उनके द्वारा रचित 'चरितावली', बालमुकुंद गुप्त द्वारा प्रताप नारायण मिश्र की जीवनी कार्तिक प्रसाद खत्री द्वारा-मीराबाई का जीवन-चरित्र, आदि। द्विवेदी युग में तथा उनके बाद भी ऐतिहासिक, राजनीतिज्ञों, साहित्यकारों एवंम योध्दाओं पर जीवनियाँ लिखी गयी।

प्रस्तावना-

जीवनी साहित्य को देखते हुए हमें यह दृष्टिपात होता है कि, साहित्यकारों की जीवनियाँ अपेक्षाकृत कम मात्रा में लिखी गई किंतु जो भी लिखी गई वे बहुत महत्त्वपूर्ण है। प्रेमचंद के पुत्र अमृतराय ने प्रेमचंदकी जीवनी 'कलम का सिपाही' तथा रामविलास शर्मा द्वारा लिखित 'निराला की साधना' वस्तुत: हिन्दी साहित्य के गौरव ग्रंथ है।

जीवनी लेखन की दिशा में होनेवाले ऐसे अत्यंत महत्त्वपूर्ण प्रयत्नों और उपलब्धियों में अमृतराय, डॉ.रामविलास शर्मा के पश्चात बहुमुखी प्रतिभा के धनी विष्णु प्रभाकरजी का योगदान उल्लेखनीय रहा है। इन्हें हिंदी जीवनी साहित्य में प्रमुख स्थान पर रखा जाता है। उन्होंने शरतचंद्र चटर्जी, भगतसिंह, सरदार पटेल, स्वामी दयानंद सरस्वती आदि की महत्त्वपूर्ण जीवनियाँ लिखी है। इन जीवनियों में उनका बंगलाके कथाशिल्पी शरतबाबू की जीवनी 'आवारा मसीहा' बहुचर्चित रही है। इस जीवनी ने हिंदी साहित्य को एक अभिनव गरिमा प्रदान की है। डॉ.नगेंद्रजी के शब्दों में- ''विष्णु प्रभाकरजी की यह कालजयी कृति आवारा मसीहा अद्यावधि प्रकाशित हिंदी जीवनी साहित्य की अन्यतम उपलब्धि है।''[१] 'आवारा मसीहा' हिन्दी साहित्य का गौरव ग्रंथ है। यह जीवनी विष्णु प्रभाकरजी के चौदह सालों के अथक प्रयासों से रची गयी। इसका प्रथम प्रकाशन १९७९ में हुआ और आज तक इसके कई संस्करण निकल चुके है। इस जीवनी का अंग्रेजी के साथ अन्य भारतीय भाषाओं में भी इसका अनुवाद हुआ है। इसे कालजयी रचना भी कहते है। ''यह एक ऐसी कालजयी कृति है जिसका सृजन युगों बाद होता है। हिंदी साहित्य में इतनी अच्छी जीवनी आज तक नही लिखी गई।''[२] यह एक सशक्त रचना है। इसमें जीवनी होने के साथ हिंदी की कई विधाओं के उत्कृष्ट रंग दिखाई देते है। इस जीवनी की गरीमा को देखते हुए डॉ.शशिभूषण ने कहा कि, ''यह उपन्यास परक जीवनी है।''[३]

जीवनी साहित्य के विकास में यह रचना कालजयी है और इसमें सारे गुण विद्यमान है। अपनी औदात्यता के कारणही इस रचना को साठोत्तरी हिंदी गद्य साहित्य में महत्वपूर्ण स्थान दिया गया है। समीक्षकों के नुसार- ''साठोत्तरी जगत में दो महत्त्वपूर्ण रचनाएँ प्रकाश में आई है- पद्य में दिनकर की उर्वशी और गद्य में विष्णु प्रभाकर की आवारा मसीहा।''[४]

विष्णु प्रभाकरजी ने इस जीवनी कों अपने रक्त माँस और प्राणों के अवदान से की है। इसकी विषयवस्तु कथाशिल्पी शरत्बाबू के समग्र जीवन चरित्र का दर्पण है। यह जीवनी संपूर्ण शरतचंद्र के जीवन पटल पर आधारित है ओर उसे अधोरेखित करती है। इस रचना के लिए विष्णुजी लगातार चौदह वर्ष का समय बिताया है, तभी जाकर यह जीवनी भारतीय हिंदी गद्य साहित्य का गौरवग्रंथ स्थापित हुई। विष्णु प्रभाकरजी ने शारीरिक और मानसिक कष्टों के साथ ही तथ्यों का अन्वेषण और अनुशीलन पूरी ईमानदारी और तटस्थता के साथ किया है। विष्णुजी ने खुद 'आवारा मसीहा' की भूमिका में कहा है- ''मैने इतना समय इसीलिए लगाया है कि, मै भ्रांत और अभ्रांत घटनाओं के पीछे के सत्य को पहचान सकूँ, जिससे घटनाओं से परे जो वास्तविक शरतचंद्र है उसका रुप पाठकों के सामने प्रस्तुत किया जा सके।''[५] अपनी चौदरह बरस की लगातार मेहनत और कोशिश से विष्णु प्रभाकरजी ने शरतबाबू के जीवन से संबंधित सभी घटनाओं को जुटाया। इसमें उन्होने अपना छटा इंद्रिय जिसे 'सिक्सथ सेन्स' कहते है उसका उपयोग किया है। और अपनी अनुसंधान की प्रक्रिया से उन्होंने शरतबाबू के आवारा से लेकर मसीहा तक के जीवन सफर को अभिव्यक्त करते हुए उसकी प्रामाणिकता को आबाधित रखने का आग्रह किया और इसका भी ध्यान रख कि, कहीं-कहीं इसकी पुनरावृत्ति न हो। अपनी अनुसंधानात्मक दृष्टि से उन्होंने घूम-घूमकर स्थलों, घटनाओं और मित्रों तथा दस्तावेजों और साक्षात्कारों से जीवनी संबंधी सभी प्रामाणिक साम्रगी को एकत्रित कर उसे वैज्ञानिकता, तटस्थता, सत्यता, रोचकता, संक्षिप्तता और सुगठितता से प्रस्तुत किया है। अहिंदी भाषी शरतबाबू के जीवन पट को लेकर एक अबंगाली हिन्दी भाषी विष्णु प्रभाकरजी ने 'आवारा मसीहा' को जिस ढंग से प्रस्तुत किया है वह समीपता की उपलब्धि से कहीं अधिक बेहतर हुई है। शरतबाबू के जीवन की विधायक खोज करते हुए प्रभाकरजी ने विश्वास और आस्था को मानवीय संदर्भो और घटनाओं को बीच में रखा है। इन सारी बातों को सामने रखते हुए उन्होंने पूरी गरिमाके साथ 'आवारा मसीहा' के रुप में अर्थवान जीवनी का निर्माण कर उसे उँचाई पर ले जाकर रखा है।

इस जीवनी में विष्णुजी ने अपनी पूरी निजता, स्नेह साहस और सौजन्य से शरतबाबू की निजता के क्षेत्र में प्रवेश करने से ही जीवनी का सारगर्भित प्रामाणिक स्वरुप सामने आ सका है। वे शरतबाबू के जीवन के अंतरिकता के पहल दर पहल छिपे अर्थों को खोलते हुए वे कहीं भी नही हिचकीचाते है। इन्होंने कहीं पर भी किसी भी प्रसंग में लीपापोती की अपेक्षा उन्हें सँवारकर रख दिया है। इसलिए इसमें कहीं पैबंध नही बल्कि एक बेबाकी नजर आती है। जीवनी में लेखक ने वस्तुपरक दृष्टिकोण को अपनाकर शरतबाबू के जीवन की छोटी-छोटी घटनाओं को संकलित कर जीवनी लेखन के नये मापदंड दिए है। अत: इसी बेबाकीपन और निर्भीकता ने ही इस जीवनी को मूल्यवान बनाया है।

इस मसीहा का चरित्र बहुत ही जटिल रहा है। इन्होंने अपनी जीवन कहानी को अंतरंग से अंतरंग बंधु से भी हमेशा छुपाने का कार्य किया है। शरतबाबू के इस तरह के जीवन के कारण बंगाल में उनके जीवन के बारे में अनेक लोकापवाद और जनश्रुतियाँ प्रचलित रही। उनका जीव कल्पित कथाओं, अपवादों और मिथ्याचार के भ्रांत विश्वासों से घिरा रहा। उनके जीवन के घिरे इन गर्द भ्रांतियों से उन्हे बाहर निकालना था और विष्णुजी के सामने महत्त्वपूर्ण चुनौती थी, उसे स्वीकार कर उन्होंने शरतबाबू का चरित्र 'आवारा मसीहा' में उभारक उसे भरा-पूरा कर दिया है। शरतबाबू के बारे में जो किंवदंतियाँ फैली थी उसपर से परदा हटाने का महत्त्वपूर्ण कार्य 'आवारा मसीहा' रचना ने किया है।

इस जीवनी के माध्यम से प्रभाकरजी ने शरतबाबू को समझने की कोशिश की है। इस नाते इसकी भूमिका गौरतलब है। यह जीवनी दिशाहारा, दिशा की खोज, और दिशांक नामक तीन पर्वों में विभक्त की गयी है। दिशाहारापर्व में विविध शीर्षकों के अंतर्गत शरतबाबू के बचपन से लेकर यौवन में प्रवेश की सभी घटनाओं को समाहित किया गया है। इन अभावों ने ही शरतबाबू को आवारा बनाया है। उनके जीवन की और कई विशेषताएँ है जैसे घुमकडी, निर्भिकता, साहसिकता, परोपकारिता और सौंदर्य एवं कलाप्रियता ने शरतबाबू के जीवन को और उँचा उठाती है। इन्ही विशेषताओं के साथ उन्हें राजू की मित्रता और असफल प्रेम का दर्द भी इन्हे मिला है। इसी माहोल में जब वे दु:ख में डुबे थे, तभी इनके माता-पिता का देहांत भी हो गया था। तब शरतबाबू की उम्र छब्बीस की थी। उन्होंने अपने भाई-बहनों को अपने संबंधियो और मित्रों के सहारे छोड़कर जीविकोपार्जन के लिए रंगून रवाना हो गये।

जीवनी का दूसरा पर्व दिशा की खोज में वे जीविका के लिए भारत में फिरते है और कहीं पर भी जीविकाश्रय न मिलने की स्थिति को देख वे बर्मा चले जाते है। यहाँ जाने पर वे एक तरफ अपने सपनों को भंग होता देखते है तो दूसरी ओर यही से उनके दाम्पत्य

जीवन की शुरुवात भी होती है। इस तरह एक का भंग होना और दूसरे की शुरुवात ने शरतबाबू को थोड़ा सहारा दिया। उनका प्रथम विवाह अज्ञेश्वर की बेटी शांति के साथ होता है, जल्द वे पिताभी बन जाते है। इस बच्चे और पत्नी तथा दाम्पत्य जीवन का सूख थोड़े ही दिनों में बिखर जाता है। क्योंकि प्लेग की महामारी में पत्नी और पुत्र की मृत्यु हो जाती है। इतना होते हुए भी शरतबाबू निर्भय होकर पिड़ितों की सेवा करते है। इसी दौरान उनकी 'बड़ी दीदी' नामक कहानी 'भारती' पत्रिका में प्रकाशित होती है जिससे बंगला साहित्य जगत में हलचल मच जाती है। इसी पर्व में वे धीरे-धीरे कथाशिल्पी के रुप में हमारे सामने प्रतिष्ठित होते है। शरतबाबू अपना दूसरा विवाह मोक्षदा नाम की युवती से करते है जिसे वे हिरण्यमयी नाम से पुकारते है या नाम देते है। इस पत्नी के सहयोग से वे अपना दूसरा वैवाहिक दाम्पत्य जी आजीवन तक सन्मानपूर्वक चलाते है। यहाँ से शरतबाबू एक कथाकार के रुप में विख्यात होते है, जिनमें उनकी अनेक रचनाएँ प्रकाशित है। वे अपनी नौकरी को सन १९१६ में इस्तीफा देकर अपने देश कलकत्ता लौट आते है।

जीवनी के तिसरे पर्व 'दिशांत' में शरतबाबू के वह से वे बनने की कथा समाविष्ट है। इसमें उनके प्रतिष्ठित साहित्यकार के रुप को चित्रित किया गया है। इस पर्व में वे पाठकों के प्रिय हो जाते है। बंगला के लोग भी उनके पूर्व जीवन को भूल मुक्त स्वीकृति देते है। अनेक रचनाओं के प्रकाशन तथा मानवीय कार्यों के कारण वे मसीहा बन जाते है। इस पर्व में रचनाकार ने मसीहा के साहित्यिक विवाह और राजनीतिक गतिविधीयों को विशेष रुप से सामने लाने का सफल प्रयास किया है।

इस जीवनी के तीनों भी पर्वो का पठन-पाठन करने के बाद हम इस निष्कर्ष पर पहुँचते है कि, शरतबाबू का संवेदनशील, साहित्यिक और मानवीय व्यक्तित्व ही इस जीवनी में उभरकर सामने आया है। विष्णु प्रभाकरजी ने उनके व्यक्तित्व के अन्तरिक और बाह्य रुप को बहुतही निपक्षता के साथ पाठकों के सामने रखने का प्रयास किया है। इस व्यक्तित्व के बारे में स्वयं लेखक कहता है- ''मैने उनकी बुराईयों को छिपाया नही है। शरत बहुत सताया गया था। वह निराला की तरह मनमौजी था। वह न साधु था न संत वह दैहिंक संबंधों के लिए भी नही जिया। पूरी जिंदगी उसने नारी के दैहिक संबंधों की अपेक्षा नारी के उदात्त स्वरुप की व्याख्या की है।''[६] इसी दृष्टि से शरतबाबू महान बनते है और हमेशा दलित, उपेक्षित और बदनाम स्त्रियों में मानवीयता खोजकर अपनी संवेदनशीलता के आधार पर उन्हे अमर बना देते है। लेखक कहते है, ''श्रध्दा है, अंधभक्ति नही। इसीलिए वे नीर-क्षीर विवेक कर सके है। उन पर यह आक्षेप भी लगाया जा सकता कि उन्होंने शरत की भावतिरेक में आकर निर्बंध निंदा की है या प्रशंसा की है।''[७] इस जीवनी में लेखक कहीं भी भटका नही है इसमें एक प्रकार से संतुलन प्रस्थापित किया है। इसलिए 'आवारा मसीहा' की रचना में शरतबाबू का व्यक्तित्व सफल और प्रतिफलित हुआ है और लेखक ने उसे अभिव्यक्ति का कलात्मक ढंग भी प्राप्त करके दिया है।

यह एक ऐसा शोध ग्रंथ है, जिसमें प्रभाकरजी ने अपने अथक परिश्रम द्वारा शरतजीके व्यक्तित्व में छिपे तथ्यों को प्रकाश में लाने का कार्य किया है। इसमे अबंगला भाषी हिंदी भाषी लेखक ने एक चरितनायक के बिहार से बर्मातक फैले मित्रों, परिचितो से व्यक्तिगत संपर्क स्थापित कर पूरी सच्चाई ईमानदारी, लगन और आस्था के साथ इस रचना का निर्माण किया है। यह एक पूरी परिश्रमिक कृति है। इसमें तत्कालीन बंगला और बर्मा का सामाजिक राजनीतिक, सांस्कृति, आर्थिक परिवेश का प्रत्यक्ष तथा अप्रत्यक्ष रुप से समावेश हुआ है। नदी की तरह यह रचना प्रवाहमान हुई है। लेखक ने जिस भाषा का प्रयोग इस रचनामें किया है वह शरतबाबू के साहित्य से मिलती-जुलती दिखाई पड़ती है।

इस 'आवारा मसीहा' जीवनी के माध्यम से लेखक ने शरतबाबू के प्रामाणिक जीवन को उद्घाटित किया है। जो उन्हें अमर कथाशिल्पी बना देती है। इसमें उनकी रचना प्रक्रिया पर भी दृष्टिक्षेप डालकर उनके बारे में फैले अने भ्रमित कल्पनाओं का, अपवादों का, आरोपों का निराकरणकर शरतबाबू के साहित्यिकता से परिचित भी करना लेखक नही भूला।

'आवारा मसीहा' जीवनी का विवेचन करके हम इस निष्कर्ष पर पहुँचते है कि, यह एक गौरव ग्रंथ रचना है। एक अतिउच्च तथा श्रेष्ठतम जीवनी है। इसमें जीवनी के लिए जो बातें आवश्यक होती है, उन सभी का समावेश हुआ है। यही हिंदी के जीवनी साहित्य में सर्वश्रेष्ठ उपलब्धि है और जीवनी के वास्तविक स्थापत्य का यह व्यवहारिक आदर्श प्रस्तुत करती है। इसमें चरितनायक की बड़ी प्रामाणिकता के साथ वैज्ञानिकता, तटस्थता और वस्तुनिष्ठता के आधार पर कलात्मक अभिव्यक्ति हुई है। लेखक ने इसमें नायक का सबलत और दुर्बलता का यथार्थ रुप चित्रित किया है। शरतबाबू के व्यक्तित्व के इर्द-गिर्द घिरे किवदंतियों और अज्ञात घटनाओं का

शोधपूर्ण ढंग से उसका खंडन कर उसे परिमार्जित और उद्घाटित किया गया है। इस व्यापक आईने के माध्यम से हम शरतबाबू का चरित्र देख सकते है। नि:संदेह यह जीवनी एक कालजयी और अमर रचना बन पड़ी है, जो जीवनी साहित्य को समर्थ बना देती है।

संदर्भ

१.हिंदी साहित्य का इतिहास, संपा. डॉ.नगेंद्र, डॉ.हरदयाल पृ.८१३
२.विष्णु प्रभाकर-डॉ.विश्वनाथ मिश्र,डॉ.कृष्णचंद्र गुप्त पृ.१८९
३.साहित्य विधाएँ-डॉ.शशिभूषण सिंघल पृ.१८८
४.संचारिका- जुलाई पृ.४०
५.आवारा मसीहा-विष्णु प्रभाकर पृ.१४
६.संचेतना- जून २००९ पृ.१४
७.वही पृ.११